अहिंसा यात्रा प्रेस विज्ञप्ति

सुविनीत सुखी और अविनीत बनता है दुःखीः आचार्यश्री महाश्रमण

-केरल में गतिमान अहिंसा यात्रा ने अलप्पुझा जिले में किया प्रवेश

-लगभग तेरह किलोमीटर का विहार कर आचार्यश्री पहुंचे थरवूर

-घमंड को छोड़ विनय का भाव रखने की आचार्यश्री ने दी पावन प्रेरणा

05.03.2019 थरवूर, अलप्पुझा (केरल): 'ईश्वर के घर' के नाम से सुप्रसिद्ध और प्राकृतिक संपदाओं से और सौंदर्य से परिपूर्ण राज्य केरल को मानवीय मूल्यों से परिपूर्ण बनाने और केरल की धरती को अपने चरणकमल से पावन बनाने को अपनी अहिंसा यात्रा के साथ गतिमान जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के ग्यारहवें अनुशास्ता, भगवान महावीर के प्रतिनिधि, अखण्ड परिव्राजक, शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमणजी ने अपनी धवल सेना के साथ मंगलवार को केरल के नए जिले अलप्पुझा में मंगल प्रवेश किया।

कोच्चि नगरी को पावन बनाने के बाद अब महातपस्वी के ज्योतिचरण केरल की राजधानी तिरुअनंतपुरम की ओर गतिमान हैं। इस क्रम में आचार्यश्री महाश्रमणजी ने अरूर स्थित अवर लेडी आॅफ मर्सी आई.सी.एस.ई./आई.एस.सी. स्कूल से मंगल प्रस्थान किया। केरल में सूर्य की किरणें नित्य की भांति प्रखर रूप में थी, किन्तु वह महातपस्वी के गतिमान चरणों को थामने में नाकाम थी। रास्ते में श्रद्धा से नत होने वाले लोगों पर मधुर मुस्कान के साथ आशीर्वाद प्रदान करते हुए आचार्यश्री निरंतर गतिमान थे। इस बीच अपने विहार के दौरान आचार्यश्री एर्नाकुलम जिले की सीमा को अतिक्रान्त कर केरल के नए जिले अलप्पुझा में पावन प्रवेश किया। कुल लगभग तेरह किलोमीटर का विहार कर आचार्यश्री थरवूर गांव स्थित सेंट जोसेफ इंडस्ट्रियल ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट में पधारे।

विद्यालय परिसर में आयोजित मंगल प्रवचन कार्यक्रम में उपस्थित श्रद्धालुओं को आचार्यश्री ने पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा कि किसी को कोई विनय की शिक्षा देता है। उसको विनय की प्रेरणा दी जाती है, अच्छी सलाह दी जाती है, उस अच्छी सलाह को भी जो व्यक्ति स्वीकार नहीं करता, उल्टा गुस्सा करता है तो वह आने वाली दिव्य लक्ष्मी को डंडे से वापस करने का प्रयास करता है। आदमी किसी की सलाह माने न भी मानें, किन्तु उसे गुस्सा तो नहीं करना चाहिए। इसलिए आदमी को सलाह भी पात्रता देखकर देने का प्रयास करना चाहिए।

विनय एक ऐसा तत्त्व है, जो आदमी को ऊंचा उठाने वाला होता है। आदमी को विनय का प्रयोग करने का प्रयास करना चाहिए। विनीत आदमी सुखी होता है और अविनीत दुःखी बन सकता है। अविनीत को विपत्ति और सुविनीत को सम्पत्ति प्राप्त हो सकती है। आदमी को सुविनीत और अनुशासित होने का प्रयास करना चाहिए। आचार्यश्री ने उपस्थित लोगों को मुनि खेतसीजी की कथा के माध्यम से विनीत और अनुशासित होने के लिए उत्प्रेरित करते हुए कहा कि आदमी के भीतर विनय, निरहंकारता और सेवा की भावना का विकास हो तो आदमी ऊंचाई को प्राप्त कर सकता है। आदमी को कभी घमण्ड नहीं करना चाहिए। घमण्ड करने का वाला सिर कभी नीचे हो सकता है। आदमी को घमण्ड का परित्याग कर विनय भाव के विकास का प्रयास करना चाहिए और उसे बनाए रखने का प्रयास करना चाहिए।

आचार्यश्री के मंगल प्रवचन के उपरान्त इंस्टीट्यूट के प्रिंसिपल श्री वर्गीस के.वी. ने अपनी श्रद्धासिक्त अभिव्यक्ति के माध्यम से श्रीचरणों की अभिवन्दना कर पावन आशीर्वाद प्राप्त किया।